ISSN 2395-051X

भारतीय संस्कृति एवं आधुनिकीकरण

डॉ. संजय खरे
सहप्राध्यापक, समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

वर्तमान समय को यदि गूढ दृष्टि से देखा जाए तो हम पाएंगे कि वर्तमान समय संक्रांति काल का समय है। वर्तमान समय का युवा वर्ग पुरानी परंपराओं को त्याग कर खुली विचारधारा युक्त हो गया है। आज का पढ़ा लिखा युवा आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण में व्यापक अंतर जानता है परंतु हमारे समाज में आज भी रूढ़िवादिता तथा खोखली परंपराओं का अंत नहीं हुआ है। आज भी समाज के विभिन्न घटक जैसे सांस्कृतिक रीति रिवाज विवाह, महिलाओं की स्थिति तथा शिक्षा को लेकर समाज में आज भी अंधविश्वास एवं दकियानूसी परंपराएं प्रचलित है जो हमारे देश को आधुनिक बनाने में रोड़े अटका रही हैं। लेकिन युवा वर्ग में आधुनिकीकरण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है तथा वे समाज की उन परंपराओं को जो कि उन्हें आगे बढ़ने से रोकती थी उन्हें तोड़ कर आगे बढ़ रहे हैं! प्रत्येक समाज के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि समाज में आधुनिकीकरण हो। आधुनिकीकरण के द्वारा ही हम अपने राष्ट्र को विश्व के दूसरे राष्ट्रों एवं समाजों के बराबर ला सकते हैं। यदि इस प्रकार से सामाजिक परिवर्तन को कर पाने में कोई समाज असमर्थ रहता है तो दूसरे समाज उसके अस्तित्व को समाप्त कर सकते हैं।

मुख्य शब्द - संस्कृति, आधुनिकीकरण, समाज, मान्यताऐं, अंधविश्वास, परम्परा।

एक समय था जब दुनिया मात्र विश्वासों पर चल रही थी विश्वास से तात्पर्य है सुनी-सुनाई पहले से अपनाई जाने वाली मान्यताओं को ही सत्य एवं अंतिम मानकर उन्ही के अनुकूल आचरण करना मात्र जीवन का उद्देश्य एवं लक्ष्य उस समय के लोगों के लिए रहा। चाहे वह आस्था ईश्वर को लेकर हो, धर्म को लेकर हो, समाज और उसकी मान्यताओं एवं रस्म रिवाजों को लेकर, व्यक्ति अथवा समूह की व्यवसायिक एवं आर्थिक दृष्टि से संबंधित हो, जो कुछ चलता आ रहा था, उस दुनिया के लिए वह अंतिम सत्य था। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है शनैः शनैः परिवर्तन होना आरंभ हुआ। व्यक्ति की जिंदगी के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने छेड़छाड़ आरंभ की, वैज्ञानिक खोजों एवं अनुसंधान ने अब तक चलती आ रही दुनिया के परंपरागत जीवन में सार्थक हस्तक्षेप आरंभ किया और परंपरागत जीवन शैली तथा जीवन चिंतन के बीच टकराहट स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी परिणामतः परंपराओं, अंधविश्वासों, एवं चली आ रही मान्यताओं, मूल्यों एवं आस्थाओं की जड़े हिलने लगी और उनका स्थान लेने के लिए नए तर्क, नए विचार, अपरम्परागत सोच और प्रभाव पर आधारित चिंतन ने अपने कदम आगे बढाए यह सब आधुनिकता के आधार बने।

आधुनिक दर्शन ने अंधविश्वास का बहिष्कार कर विश्वास की जगह वैज्ञानिक एवं बौद्धिक विधियों को

प्रधानता दी व, तर्क को प्रमुख स्थान दिया। ज्ञान की वाढ़ एवं विज्ञान के विस्फोट ने जीवन के सभी पक्षों में क्रांति का सूत्रपात किया। यह वैचारिक क्रांति सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, प्रौद्योगिकी एवं शैक्षणिक सभी क्षेत्रों में आने लगी।

आधुनिकता आज दुनिया की अनिवार्यता वन गई और विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी को इसके प्रमुख आधार के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। पुराने प्रतिमानों में लोगों की आस्था नहीं रही। नए प्रतिमान प्रत्येक क्षेत्र में अपनाए जाने लगे इस प्रक्रिया को ही आधुनिकीकरण की संज्ञा दी गई। इस प्रकार आधुनिक समाज ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तकनीकी ज्ञान के साथ अपना सीधा संवंध जोड़ लिया तथा अंधविश्वासों एवं पुरानी मान्यताओं के साथ संबंध विच्छेद कर लिया। इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, आर्थिक हो, या सांस्कृतिक आधुनिकीकरण को स्वीकार किया जाने लगा। आवश्यकता इस वात की है कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों और आधुनिकीकरण के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए इससे सामाजिक गतिशीलता आएगी।

"परंतु व्यापक रूप में आधुनिकीकरण से तात्पर्य है कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा औद्योगिक, नैतिक मूल्यों तथा मानवीय आकांक्षाओं को अन्य उन्नत समाजों के अनुरूप ढालना ही आधुनिकीकरण है" आधुनिकीकरण के अर्थ के विषय में विचारकों ने कई दृष्टियों से प्रकाश डाला है। सामान्यतः इसे व्यवहार की एक ऐसी व्यवस्था माना जाता है जो मुख्यतः शहरी औद्योगिक शिक्षित एवं सहभागी पश्चिमी यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका या सोवियत संघ तथा जापान के समाजों के समकक्ष है। आधुनिकीकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से इन समाजों के कार्य सम्पन्नता एवं उपलब्धियों के मानक अर्द्ध-विकसित समाजों द्वारा प्राप्त किए जा सके। आधुनिकीकरण में कुछ भिन्नता पूर्ण विशेषताओं के नए-नए प्रकार के व्यवहार की प्रणाली जन्म लेती है। इस प्रणाली में मूल्य परिवर्तन होता है। परंपरागत मूल्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन हो जाता है आधुनिकीकरण के लिए मूलभूत समझे जाने वाले संस्थागत प्रबंध के लिए भी मूल्यों में परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रकार आधुनिकीकरण का अर्थ अधिक उन्नत देशों की कुछ विशेषताओं एवं तथ्यों को अपनाना मात्र ही नहीं है वरन इन विशेषताओं को तार्किक क्रम एवं व्यवस्था में अपनाना तथा एक सांस्कृतिक अध्ययनों के आधार पर बनाने गये आधुनिकता के लक्षणों के द्वारा क्रियात्मक परिवर्तन होते हैं। इसके लिए व्यक्तित्व खुला होना चाहिए। मूल्य एवं अभिप्रेरणाएं परिवर्तित होनी चाहिए तथा संस्थागत व्यवस्थाएं भी तदानुसार ही संयोजित होनी चाहिए। इन सभी लक्षणों के स्वीकृत संयोजन ही आधुनिकीकरण को अभी-प्रेरित करते है।

आधुनिकीकरण ने यदि सबसे महत्वपूर्ण योगदान किसी क्षेत्र में दिया है तो वह है सांस्कृतिक क्षेत्र। क्योंकि किसी भी देश की संस्कृति उस देश का आधार होती है परंतु आवश्यक होता है कि उस देश के निवासी देश की संस्कृति को सही अर्थों में समझे परंतु कालचक्र के घूमते घूमते संस्कृति कहीं विलुप्त सी हो जाती है तथा वह कई कुरीतियों एवं अंधविश्वास के आवरण से ढक जाती है और उसकी सही तस्वीर कहीं खो जाती है। परंतु आज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया उस पर चढ़े आवरण को हटाने की कोशिश कर रही है, ताकि हमारे देश की महान संस्कृति अपने सही रूप में दुनिया के सामने आ सके।

भारतीय संस्कृति -

विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति लगभग 5000 वर्ष पुरानी हमारी संस्कृति विश्व की सबसे उत्कृष्ट संस्कृति है। पूर्णता परिशुद्ध रूप में भारतीय संस्कृति हर प्रकार के बंधनों से मुक्त है। मनुष्य क्या है ? संसार क्या है ? प्रकृति

क्या है ? ईश्वर क्या है ? मनुष्य के क्या कर्तव्य हैं ? तथा सनातन धर्म क्या है ? इन सभी जटिल प्रश्नों के उत्तर से युक्त हमारी संस्कृति जीवन जीने की सही कला सिखाती है। जिसमें ना तो किसी भी प्रकार का भेदभाव है ना जातिवाद और ना ही किसी प्रकार का पिछड़ापन है। प्राचीन काल में जब पूर्ण परिशुद्ध ज्ञान दिया जाता था, जब आत्मा तथा परमात्मा का साक्षात्कार करना सिखाया जाता था तब मनुष्य को यह शिक्षा दी जाती थी कि वास्तव में वह कौन है, उसका अस्तित्व क्या है? उसका कर्तव्य क्या है? जिससे मनुष्य को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती थी तथा वह अपना तथा अपने समाज का विकास करता था । इसलिए तत्कालीन भारत विश्व गुरु के पद पर आसीन था। परंतु समय काल के परिवर्तन होते होते मनुष्य ने अपने क्रियाकलापों से संस्कृति को दूषित कर दिया तथा धीरे-धीरे सभी संस्कारों ने रीति-रिवाजों का रूप एवं धर्म ने संप्रदाय का रूप ले लिया। परिणाम स्वरूप जो संस्कृति सदैव आगे बढ़ने तथा संपूर्ण ज्ञान से आत्म तत्व को प्राप्त करने का पक्ष रखती थी वही संस्कृति पिछड़ी कहलाने लगी जिसे पुनः जागृत करने की आवश्यकता है।आज आधुनिकीकरण की लहर उस पर से चढ़ी परत को हटाने का कार्य कर रही है।

भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की जागरूकता आज शुरू नहीं हुई बल्कि हर युग में कुछ ऐसे समाज सुधारक महापुरुप पैदा होते रहे हैं जिन्होंने अपने विचारों से समाज में फैले अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर नई चेतना को फैलाने का प्रयास किया है। जिनके अभूतपूर्व प्रयास का ही परिणाम है जो आज हम आधुनिक भारत में सांस ले रहे हैं। आज हमारे सामने ऐसे कई महापुरुषों के उदाहरण हैं, जिन्होंने समाज में चली आ रही कुरीतियों अंधविश्वास को मिटा कर एक नई संस्कृति, एक नए समाज का निर्माण किया है। इन महापुरुषों में मुख्यतः राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी आदि नाम प्रमुख है।

आधुनिकीकरण के माध्यम -

शिक्षा - आधुनिकीकरण मे शिक्षा एक सशक्त साधन है जिन समाजों में वातावरण उच्च स्तर का होता है उनमें तीव्रता से सामाजिक परिवर्तन होता है। शिक्षा द्वारा ही आर्थिक विकास के मार्ग खोजे जाते हैं और सामाजिक आकांक्षाओं का निर्धारण किया जाता है तथा ज्ञान भंडार बढ़ता है। नैतिक मूल्यों का सृजन होता है। जैसा कि हम जानते हैं कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के लिए सामाजिक परिवर्तन आवश्यक है और वह समुचित शिक्षा व्यवस्था द्वारा ही संभव है।

ग्रहण शीलता - आधुनिकीकरण के लिए केवल सामाजिक परिवर्तन ही आवश्यक नहीं है अपितु उन परिवर्तनों को ग्रहण करना भी आवश्यक है। बिना ग्रहण शीलता के आधुनिकीकरण संभव नहीं है। जब समाज पुरानी मान्यताओं को शीघ्र त्याग कर नवीन मान्यताओं को ग्रहण कर लेता है तो उन समाजों को आधुनिक समाज कहा जाता है आधुनिकीकरण की यह प्रक्रिया सामाजिक परिवर्तनों को ग्रहण करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

प्रेरणा एवं उच्च आकांक्षाएं - जो समाज कुछ नयापन देखना चाहते हैं उनमें उच्च स्तर की प्रेरणा तथा उच्च स्तर की आकांक्षाएं पाई जाती हैं इसके आधार पर ही उसमें रचनात्मक या सृजनात्मक कार्य करने की प्रेरणा तथा आकांक्षा का प्रादुर्भाव होता है। कुछ समाज ऐसे भी होते हैं जो अपने वर्तमान से संतुष्ट रहते हैं। किंतु उनमें प्रेरणा तथा आकांक्षा शक्ति नहीं होती और वह पिछड़ जाते हैं। इसके विपरीत उच्च आकांक्षा स्तर पर प्रेरणा की शक्ति उसे आधुनिक बनाकर प्रगति के रास्ते पर अग्रसर करती है।

अतः हम कह सकते है कि वर्तमान समय में व्यक्ति आगे बढने हेतु इच्छुक है वह प्रगति पथ पर आगे बढ़कर आर्थिक, नैतिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति करना चाहता है। वह पीछे पलटकर देखना नहीं चाहता है। इस कारण आज के समय में आधुनिकीकरण का महत्व तथा आवश्यकता बढ़ गई है। भारतीय समाज जो एक प्राचीन समाज है जिसकी संस्कृति बहुत प्राचीन है। कालान्तर में उसमें कई अंधविश्वास एवं रूढियों ने जन्म ले लिया है। इन सबको आधुनिकीकरण के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

संदर्भ -

1. पचौली - डॉ. सत्यप्रकाश : शिक्षा के आयाम ,आदित्य प्रकाशन, वीना, 1998
2. पान्डे डॉ. आर. एस. : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2005
3. अग्रवाल जी.के. एवं श्रीनाथ शर्मा : भारत में सामाजिक परिवर्तन, आगरा बुक स्टोर, 1991
4. कुटपु स्वामी बी. : सोशल चेंज इन इंडिया, विकास पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली, 1972